MDW-RP-(2)

Impact Factor-7.675 (SJIF) ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

November -2020

SPECIAL ISSUE

INDIAN WOMEN : PRESENT, PAST AND FUTURE

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor:
Dr.S.N.Jadhavar
Head, Deptt. of History,
Sham Gadale Art's College,
Dahiphal (Wadmauli)
Tq.KAJJ,.Dist. BEED.

The Journal is indexed in:

Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
Cosmos Impact Factor (CIF)
International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : *www.aadharsocial.com*

Aadhar Publications

Savitribai College of Art's
ID. No. PU/AN/A/ 53/1999
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

PRINCIPAL
Savitribai College of Art's
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. A.Nagar

Impact Factor – 7.675 ISSN – 2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

November - 2020

ISSUE No – CCLXIV (264)

INDIAN WOMEN : PRESENT, PAST AND FUTURE

Prof. Virag.S.Gawande
Chief Editor :
Director
Aadhar Social Research &, Development Training Institute, Amravati.

Dr.S.N.Jadhavar
Editor :
Head, Deptt. of History,
Sham Gadale Art's College, Dahiphal (Wadmauli) Tq.KAJJ,.Dist. BEED.

Dr.R.M.Hajari
Executive Editor:
Principal
Sham Gadale Art's College, Dahiphal (Wadmauli) Tq.KAJJ,.Dist. BEED.

Aadhar International Publications
For Details Visit To : www.aadharsocial.com

© All rights reserved with the authors & publisher

Savitribai College of Arts, Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar ID. No. PU/AN/A/ 58/1989
PRINCIPAL
Savitribai College of Arts
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

B.Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor - ((SJIF) -7.675, Issue NO, 264 (CCLXIV)
ISSN : 2278-9308
November, 2020

Editorial Board

Chief Editor -
Prof.Virag S.Gawande,
Director,
Aadhar Social Research &,
Development Training Institute, Amravati. **[M.S.] INDIA**

Executive-Editors -

- **Dr.Dinesh W.Nichit** - Principal, Sant Gadge Maharaj Art's Comm,Sci Collage, **Walgaon.Dist. Amravati.**
- **Dr.Sanjay J. Kothari** - Head, Deptt. of Economics, G.S.Tompe Arts Comm,Sci Collage Chandur Bazar Dist. Amravati

Advisory Board -

- **Dr. Dhnyaneshwar Yawale** - Principal, Sarswati Kala Mahavidyalaya , Dahihanda, Tq-Akola.
- **Prof.Dr. Shabab Rizvi** ,Pillai's College of Arts, Comm. & Sci., New Panvel, Navi Mumbai
- **Dr. Udaysinh R. Manepatil** ,Smt. A. R. Patil Kanya Mahavidyalaya, Ichalkaranji,
- **Dr. Sou. Parvati Bhagwan Patil** , Principal, C.S. Shindure College Hupri, Dist Kolhapur
- **Dr.Usha Sinha** , Principal ,G.D.M. Mahavidyalay,Patna Magadh University.Bodhgay Bihar

Review Committee -

- **Dr. D. R. Panzade,** Assistant Pro., Yeshwantrao Chavan College, Sillod. Dist. Aurangabad (MS)
- **Dr.Suhas R.Patil** ,Principal ,Government College Of Education, Bhandara, Maharashtra
- Dr. **Kundan Ajabrao Alone** ,Ramkrushna Mahavidyalaya, Darapur Tal-Daryapur, Dist-Amravati.
- **DR. Gajanan P. Wader** Principal , Pillai College of Arts, Commerce & Science, Panvel
- **Dr. Bhagyashree A. Deshpande,** Professor Dr. P. D. College of Law, Amravati
- **Dr. Hrushikesh Dalai** , Asstt. Professor K.K. Sanskrit University, Ramtek

Our Editors have reviewed paper with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responcible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers.

- Executive Editor

Published by -
Prof.Virag Gawande
Aadhar Publication ,Aadhar Social Research & Development Training Institute, New Hanuman Nagar, In Front Of Pathyapustak Mandal, Behind V.M.V. College,Amravati
(M.S) India Pin- 444604 **Email :** aadharpublication@gmail.com
Website : www.aadharsocial.com **Mobile :** 9595560278 /

Savitribai College of Arts ID. No. PU/AN/... 58/1999 Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar
PRINCIPAL
Savitribai College of Arts
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

INDEX

No.	Title of the Paper / Authors' Name	Page No.
1	The Sporting Woman in Hindi Cinema and Civic Arouse (With special reference to *Mary KomandDangal*) **Dr. Jaybhaye Vitthal K.**	1
2	Role of Education in Empowering Women in India **Smt. Anita.s. Dolli / Smt. Surekha .A .patil**	4
3	If she had poetic genius ancient age in India? **Sunila Gondhalekar**	9
4	Portrayals of Womenin John Keats' Selected Sonnets **Smt. Shakuntala Suryabhan Bade**	12
5	Empowerment of women in india "a historical approach" **Prof. Dr. Shahin jahan A Malek**	15
6	Indira Gandhi: First Woman Prime Minister of India and Democracy **Sanjeev Kumar Singh/ Dr. Rammanohar Lohia**	18
7	Female Characters in Indian English Feminist Literature **Ravi Subhashrao Satbhai**	22
8	Resilience of Afghan women in Khaled Hosseini's novel: A Thousand Splendid Suns **Latha G.M**	25
9	A study on women and self help group **Smt. Surekha .A .Patil / Smt. Anita.S. Dolli**	
10	Unconventional Female Protagonist in Mahesh Dattani's Play *Dance Like a Man* **Dr. Anant Vithalrao Jadhav**	32
11	भारत में महिलाओं के सशक्तीकरण में शिक्षा की भूमिका और राष्ट्र निर्माण हर्ष कुमार	35
12	पालि साहित्य में वर्णित नारी के गुण—अवगुण डॉ० अरविन्द कुमार सिंह	39
13	बुद्धकाल में नारियों की स्थिति डॉ० मालती सिन्हा	45
14	नारियों के बदलते आयाम डॉ० संजय कुमार सिंह	51
15	'स्वातंत्र्यपूर्व हिन्दी साहित्य में स्त्री—विमर्श' (महादेवी वर्मा के गद्य—साहित्य के विशेष संदर्भ में) प्रा. सुरेन्द्रकुमार गिरधारीलाल साहु	55
16	राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाओं का योगदान राहसे दिनेश टेटया	61
17	मध्यकालीन इतिहास में स्त्री शक्ति का प्रतीक पहली मुस्लिम शासिका "रजिया सुल्तान" डॉ० सुरेश प्रसाद पाण्डेय	65
18	इतिहास और इतिहास लेखन डॉ० सुरेश प्रसाद पाण्डेय	68
18	हैदराबाद मुक्ती संग्रामातील महिलांचे योगदान रूसंक्षिप्त आढावा प्रा.प्रेमचंद गुंडू गायकवाड	71
19	पंडिता रमाबाई का शैक्षिक एवं सामाजिक सुधार कार्य वाजगे नवनाथ दत्तात्रय	76

Savitribai College of Arts, ID. No. PU/AN/A/ 58/1999, Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

PRINCIPAL
Savitribai College of Art's
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. A.Nagar

B.Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor - ((SJIF) -7.675, Issue NO, 264 (CCLXIV) | ISSN : 2278-9308 November, 2020

पंडिता रमाबाई का शैक्षिक एवं सामाजिक सुधार कार्य

वाजगे नवनाथ दत्तात्रय,
सहाय्यक प्राध्यापक, इतिहास विभाग,
सावित्रीबाई कला महाविद्यालय, पिंपलगाव पिसा, ता. श्रीगोंदा, जि. अहमदनगर, (महाराष्ट्र)
मो.नं. 8805109637 ई–मेल : ndwajage@gmail.com

शोध निबंध का सारांश (Abstract) :

उन्नीसवी शती में पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली और विचारों के कारण भारत में सामाजिक सुधार का प्रारंभ हो गया। सामाजिक कुरीतियाँ, प्रथा और परंपराओं को लेकर भारत में सामाजिक सुधार आंदोलन शुरु हो गया। राजा राममोहन रॉय के कार्य से भारत में समाज सुधार आंदोलन की नींव रखी गई। उनके बाद भारत के कई प्रदेशों में सामाजिक सुधार आंदोलन शुरु हो गया। इनमे स्त्री समाज सुधारकों के तौर पर पंडिता रमाबाई का नाम बडे गौर से लिया जाता है।

पंडिता रमाबाईने आधुनिक भारत में स्त्री सुधार कार्य में विशेष सहयोग दिया। उन्नीसवी शती में स्त्रीयों की सक्षमता का पुरस्कार उन्होंने किया। इ.स. 1882 में 'स्त्रीधर्मनीती' ग्रंथ की रचना उन्होंने की थी। इसी समय पूना, मुंबई, अहमदनगर, ठाणे और सोलापूर इन जगहोंपर उन्होंने 'आर्य महिला समाज' की स्थापना की थी। उन्होंने इंग्लंड जाकर उच्च शिक्षा ली थी और अपनी शिक्षा का उपयोग दलित एवं पीडित महिलाओं के उध्दार हेतू किया। भारत में स्त्रियों को शिक्षा देने हेतू उन्होंने विशेष कार्य किया।

मुंबई में उन्होंने 'शारदा सदन' संस्था की स्थापना करके स्त्रियों को मुफ्त में खाना देने और शिक्षा देने की व्यवस्था की। उनके कार्यसे प्रभावित होकर महाराष्ट्र के डॉ. भांडारकर, न्या.रानडे, रा.बा.भट आदी समाजसुधारकोंने शारदा सदन के कार्य में मदद की थी। प्रार्थना समाज की सहाय्यता से उन्होंने मुंबई में 'आर्य महिला समाज' की स्थापना की। स्त्रियों के विविध प्रश्नों को लेकर उन्होंने मुंबई और पूना में व्याख्यान दिए। इ.स. 1892 में किए गए विवाह की उम्र से संबंधित बील का उन्होने पुरस्कार किया। पूना से 50 कि.मी की दूरी पर स्थित केडगाव में उन्होंने 'पंडिता रमाबाई मुक्ति सदन' नाम से संस्था की स्थापना की थी। ग्रामीण जनता को किंडर गार्डन शिक्षा प्रणाली का परिचय उन्होंने कराया। ग्रामीण क्षेत्र में लडकियों के लिए प्राथमिक एवं माध्यमिक स्कूल शुरु किए। बायबल ग्रंथ का मराठी में अनुवाद किया। हिब्रू–मराठी व्याकरण पर एक किताब लिखी।

पंडिता रमाबाई ने समाज के विरोध का सामना करते हुए स्त्रियों के उध्दार हेतू विशेष कार्य किया। बालविवाह प्रथा का विरोध, विवाह की उम्र से संबंधित बील के लिए आंदोलन, विधवा स्त्रियों की शिक्षा, विधवा विवाह का पुरस्कार, किंडर गार्डन शिक्षा प्रणाली, हिंदी राष्ट्रभाषा का स्वीकार, देवनागरी लिपी का पुरस्कार, विधवाओं के लिए आश्रमों की स्थापना, बायबल का मराठी भाषा में अनुवाद, आदि सामाजिक सुधारों में पंडिता रमाबाईने विशेष सहयोग दिया। इसी कारण भारत की समाज सुधार आंदोलन में स्त्री समाजसुधारकों में उनका कार्य विशेष महत्व रखता है।

पारिभाषीक शब्द :

असाक्षरता, स्त्रीदास्य, स्त्री हक्क, केशवपन प्रथा, आर्य महिला समाज, जनगणना, परीक्षण, सामाजिक दर्जा, शैक्षिक स्थिती, बालविधवा, मिशनरी, पुनर्विवाह, उपासना मंदिर, कृपासदन, प्रीति सदन, मुक्ती सदन, शारदा सदन, धूम्रपान निषेध, सामाजिक परिषद, स्वयंसेवक, कैसर–इ–हिंद इ.

साधन चिकित्सा :

Savitribai College of Arts ID. No. PU/AN/A/ 58/1999 Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar
PRINCIPAL
Savitribai College of Arts
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

प्रस्तुत शोधनिबंध के लिए पंडिता रमाबाई के जीवन पर लिखित चरित्रों का अध्ययन किया है। जिसमे ज्योती लाजेवार, एस.एस. गाठाळ, ज्योत्स्ना देवधर, सिसिलिया कार्व्हालो, अरुणा ढेरे, शोभा पाटील आदी लेखकोने रमाबाई की जीवनी और कार्य पर प्रकाश डाला है। इसके अलावा पंडिता रमाबाईने स्वयं लिखा हुआ 'माझी साक्ष' यह ग्रंथ उपयुक्त साबित हुआ। डॉ. विद्युत भागवत ने महाराष्ट्र के स्त्रीवादी विचारप्रवाह के बारे में अपने लेखन के माध्यम से विचारविमर्श किया है। उनके लेखन से रमाबाई के जीवन पर प्रकाश पडता है। इसके अलावा द्वितीय साधनग्रंथो का अध्ययन किया गया है।

संशोधन पध्दती :

प्रस्तुत शोध निबंध के लिए ऐतिहासिक संशोधन पध्दती का उपयोग किया गया है। इस लेख के लिए प्राथमिक और द्वितीय स्त्रोतों का अध्ययन किया गया है।

प्रस्तावना :

23 अप्रैल 1858 में पंडिता रमाबाई का जन्म हुआ। अपने पिताजी अनंतशास्त्री डोंगरे इनसे उन्होंने संस्कृत भाषा का ज्ञान प्राप्त किया। इस अध्ययन के कारण धर्माभिमानी लोगों ने उनका छल किया। उनके परिवार को अपना गाव छोडना पडा। गाव छोडने के बाद पन्द्रह–सोलह साल तक उन्होंने भारत की तिर्थयात्रा की और आखिर में यह परिवार मद्रास इलाखे में आ गया। यहाँ पर हुए अकाल के कारण पंडिता रमाबाई, माता–पिता और बडी बहन की मृत्यू हो गयी। रमाबाई का बडा भाई और रमाबाई प्रवास करते हुए कोलकाता पहुँच गये। यहापर पंडिता रमाबाई और उनके भाई के विद्वत्ता की सराहना की गयी। ब्राह्मों समाज के नेता और कोलकाता विश्वविद्यालय के पंडितों ने उनके ज्ञान की सराहना की। यहाँ पर रमाबाई को 'पंडिता सरस्वती' यह उपाधी प्राप्त हुई।

अपने भाई के मित्र विपीन बिहारीदास मेधावी इस बंगाली युवक के साथ रजिस्टर तरीके से रमाबाई का विवाह हो गया। पंडिता रमाबाई चित्पावन ब्राह्मण होकर भी उन्होंने एक दलित युवक से विवाह किया। दुर्भाग्यवश पंडिता रमाबाईके पती का डेढ वर्ष के भीतर ही देहांत हो गया। इस वक्त उनकी मनोरमा नाम की एक लडकी थी। इस लडकी को अपने साथ लेकर पंडिता रमाबाई महाराष्ट्र में आ गयी। उसकें बाद पूना को उन्होंने अपना कार्यक्षेत्र बना लिया। पूना आने का उनका उद्देश्य अंग्रेजी सिखने का था। उन्होंने निजी स्तर पर अंग्रेजी का अध्ययन शुरू किया। पंडिता रमाबाई की वक्तृत्व शैली और विषय प्रतिपादन की शैली अच्छी थी। वह श्रोतांओं का मन अपने विचारों के प्रती आकर्षित करने में विद्वान थी। पूना में आने के बाद पूना शहर के विद्वानों ने उनके ज्ञान की सराहना की। हर हफ्ते में उनका व्याख्यान पूना में आयोजित किया जाने लगा। अपने व्याख्यानों से उन्होने स्त्रियों की असाक्षरता, स्त्रीदास्य, स्त्रियों के हक आदी विषयोंपर विचार प्रदर्शन किया। इन व्याख्यानों के कारण वह पूना में मशहूर होने लगी। पती की मृत्यू के बाद उन्होने अपने बाल काटने से (केशवपन प्रथा) इन्कार किया।

आर्य महिला समाज की स्थापना :

पंडिता रमाबाई के पूना आने से पहले ही आर्य महिला समाज के स्थापना की पृष्ठभूमि तैयार हो गयी थी। पंडिता रमाबाईने 30 अप्रैल 1882 को पूना में 'आर्य महिला समाज' इस संस्था की स्थापना की। उसके बाद महाराष्ट्र के सोलापूर, पंढरपूर यहा पर भी शाखाएँ शुरु की गयी। 25 नवंबर 1882 को मुंबई में 'आर्य महिला समाज के उददेश' इस विषयपर पंडिता रमाबाईने अपने विचार प्रदर्शित किए। उसके पाच दिन बाद मुंबई में भी उन्होंने 'आर्य महिला समाज' की शाखा शुरु की। स्त्रियों में ज्ञान बढाना, स्त्रियों को अपने विचार प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान करना और स्त्रियों का उध्दार करना आदी उददेश्य आर्य महिला समाज की स्थापना के पिछे थे।

हंटर कमिशन के आगे पंडिता रमाबाई का साक्ष्य (1882) :

भारत में शैक्षिक स्थिती का अध्ययन करने हेतू हंटर कमिशन की नियुक्ती की गयी थी। यह कमिशन जब पूना में आया, तब उसके सामने रमाबाईने अपने विचार प्रदर्शित किए। कमिशन का

Savitribai College of Arts ID. No. PU/AN/A/ 58/1999 Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar
PRINCIPAL
Savitribai College of Arts
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

स्वागत करते हुए पंडिता रमाबाईने जनगणना के आंकडों का आधार लेकर भाषण किया। इस वक्त भारत की 9 करोड 97 लाख स्त्रियों मे से केवल 9,95,000 (नौ लाख पिच्यानब्बे हजार) स्त्रिया ही केवल साक्षर थी। इन आकडों के आधारपर रमाबाईने भारतीय स्त्रियों की शैक्षिक स्थिती पर भाष्य किया। हंटर कमिशन के आगे उनका साक्ष्य हुआ, जिसमें उन्होंने निम्नलिखित मांगे की थी।

1) लडको के स्कूलो में पढ़ानेवाले अध्यापकोंसे जादा वेतन लड़कियों के स्कूलों मे पढ़ानेवाले अध्यापकोंको मिलना चाहिए।
2) लड़कियों के निवास की सुविधा हॉस्टेल में होनी चाहिए, और यह होस्टेल विविध उपकरणोंसे या सुविधाओं से परिपूर्ण होना चाहिए।
3) लड़कियों के स्कूलों का परीक्षण स्त्री इन्स्पेक्टरद्वारा होना चाहिए।
4) भारत में महिला डॉक्टरों की संख्या में बढ़ोतरी होनी चाहिए।
5) महिलाओं के लिए वैद्यकीय सुविधाएँ उपलब्ध होनी चाहिए।
6) महिलाओं को शिक्षा के हेतू स्कॉलरशीप मिलना चाहिए।

इस साक्ष्य के कारण पंडिता रमाबाईने सरकार का लक्ष अपनी ओर खिंच लिया। पंडिता रमाबाई की माँगो का हंटर कमिशन के अध्यक्षने स्वयं अंग्रेजी में अनुवाद कराके लिया। इस भाषण से व्हिक्टोरिया रानी भी प्रभावित हुई। इस कारण स्त्रियों की वैद्यकीय शिक्षा, स्त्रियों के लिए अस्पताल आदी महत्वपूर्ण निर्णय ब्रिटिश सरकारव्दारा लिए गये।

पंडिता रमाबाईद्वारा खिश्चन धर्म का पुरस्कार :

पंडिता रमाबाईने डॉक्टर की उपाधि लेने का निर्णय लिया और आगे की शिक्षा के लिए उन्होने इंग्लंड मे निवास किया। 17 मई 1883 में वह इंग्लंड में पहूँची। वहा पर उन्होने ख्रिश्चन धर्म का स्विकार किया। उसके चार साल पहले उन्होनें हिंदू धर्म का त्याग किया था। 11 सितंबर 1893 के केसरी अखबार के अंक में लिखा गया की "पंडिता रमाबाईने धर्मांतर किया यह दुर्भाग्यवश है।" मुंबई और पूना के अखबारोंने पंडिता रमाबाई के ख्रिश्चन धर्म स्विकार करने के निर्णय की आलोचना की। पंडिता रमाबाई के इस निर्णय से समूचे भारत में उनका नाम लिया गया। ख्रिश्चन धर्म का स्विकार करने के पश्चात उन्होने शारदा सदन इस संस्था की स्थापना की थी। बाद में मुंबई से पूना में शारदा सदन का स्थानांतर किया गया।

पंडिता रमाबाईने ख्रिश्चन धर्म का स्विकार किस वजह से किया, यह सवाल अनेक भारतीय हिंदूओं के सामने था। पंडिता रमाबाईने स्वयं 'सुबोधपत्रिका' साप्ताहिक में ख्रिश्चन धर्म का स्विकार उन्होने क्यों किया इस बात पर लेख लिखा। इस लेख मे उन्होने लिखा था की, "बायबल में ख्रिस्त का जो उपदेश है वह सत्य है। ख्रिस्त ने बताया हुआ धर्म सर्वोत्तम और निर्दोष है। ख्रिस्त का उपदेश स्वयं परमेश्वर से प्राप्त हुआ है।"

रमाबाई असोसिएशन और उसका कार्य :

17 फरवरी 1886 को पंडिता रमाबाईने इंग्लंड छोड दिया और 6 मार्च 1886 को वह अमरीका में पहूँची। 11 मार्च 1886 को आनंदीबाई जोशी के पदवी प्रदान समारंभ में वह उपस्थित थी। इंग्लंड जैसे ही अमरीका के स्त्रियों की प्रगती, स्त्रियों की शिक्षा एवं सामाजिक दर्जा देखकर उनको आश्चर्य हुआ। अमरीकी संस्था, अमरीकन स्त्रिया एवं शिक्षा आदी मुद्दों पर उन्होने अध्ययन किया। अमरीका में लगभग 30,000 मिलों का प्रवास उन्होने इस कार्य के हेतू किया।

अमरीकी स्त्री–पुरुषों के मन में रमाबाईने भारत की बालविधवाओं के प्रती सहअनुभूती निर्माण करने का प्रयास किया। उनके कार्य को मदद करने के लिए 'रमाबाई असोसिएशन' इस संस्था की स्थापना की गयी। उनके कार्य के लिए प्रारंभिक खर्चा करके दस वर्ष की राशी का इंतजाम किया गया था। 10 दिसंबर 1887 की बोस्टन शहर की सभा में उन्होंने विधवाओं की दयनीय स्थिती का वर्णन किया। इस असोसिएशन में अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, [illegible], चिटणीस आदि पदों का निर्माण करके

Savitribai College of Arts ID. No. PU/AN/A/ 56/1999 Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar
PRINCIPAL
Savitribai College of Arts
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

विश्वस्त समिती, सलाहगार समिती, एवं कार्यकारी समिती आदी समितीयों का चयन किया गया। इस असोसिएशन की वार्षीक सभा हर साल के दिसंबर माह में निश्चित की गयी। इस प्रकार असोसिएशन की घटना निश्चित की गयी थी।

26 जुलाई 1888 में The Ramabai Association of Pacific Cast नाम से एक संस्था की स्थापना करके पश्चिम अमरीकी लोगो ने रमाबाई के कार्य के लिए सहयोग दिया। रमाबाई असोसिएशन यह मिशनरी संस्था नही थी, इस कारण अमरीका के मिशनरी लोगोने और मिशनरी संस्थाओंने रमाबाई के कार्य के प्रती विरोध प्रदर्शित किया। रमाबाई असोसिएशन संस्था बंद होकर 'अमेरीकन रमाबाई असोसिएशन' नाम से दुसरी संस्था की स्थापना हुई। यह संस्था केडगाव की शारदा सदन संस्था से संलग्नित थी।

शारदा सदन संस्था का कार्य :

1881 की जनगणना मे भारत की आबादी 20 करोड तक पहुँच गयी। इनमें विधवा स्त्रियों की संख्या बड़ी मात्रा में थी। विधवा स्त्रियों का यह प्रमाण और बालविधवाओं की संख्या देखकर पंडिता रमाबाई चिंतीत हो गयी। उन्होंने स्त्रियों एवं अनाथ स्त्रियों के प्रती सेवा करने का निर्णय लिया। उन्होने पूना, मुंबई और अहमदाबाद में धनी एवं नेता लोगों से वार्तालाप किया। उन्होने इन स्त्रियों के लिए संस्था शुरु करने का विचार उनके सामने रखा, लेकीन उन्हे किसी का सहयोग प्राप्त नही हुआ।

11 मार्च 1889 मे रमाबाई ने मुंबई में विल्सन कॉलेज के नजदीक 'शारदा सदन' की स्थापना की। इस सदन में पहला प्रवेश लेनेवाली लडकी का नाम शारदा गद्रे था। इस लडक के नाम से ही उन्होंने इस संस्था का नाम शारदा सदन रखा ऐसा कहा जाता है। शारदा गद्रे यह बालविधवा नही थी, बल्की वह एक पुनर्विवाहीत बालविधवा की लडकी थी। पहले छह महिनें में पाच विधवा इस वसतिगृह में आयी थी। शारदा सदन यह संस्था बालविधवाओं के लिए थी, पर विधवा लड़कियों को कोई भी शिक्षा के हेतू भेजने तैयार नही था। यह स्थिती मुंबई जैसे शहर में थी। आनंदीबाई नाम की एक विधवाने आगे चलते महाराष्ट्र के विख्यात समाजसुधारक महर्षी धोंडो केशव कर्वे के साथ पुनर्विवाह किया। शारदा सदन के लिए अमरीका के रमाबाई असोसिएशन से धन आता था। दस साल तक मदद करने का आश्वासन इस असोसिएशन ने दिया था। हर लडकी के लिए दस पौंड वार्षिक निधी संस्था भेज रही थी। पंडिता रमाबाई ने 'रमाबाई असोसिएशन' की अनुमती से सलाह लेने के लिए एक सलाहगार समिती नियुक्त की थी। जिसमें न्यायमूर्ती रानडे, डॉ. आर.जी. भांडारकर, न्या. के.टी. तेलंग, कृष्णाजी नूलकर आदी लोग शामील थे। नवंबर 1890 में शारदा सदन का मुंबई से पूना में स्थानांतर हो गया। पूना में छात्राओं की संख्या 64 तक पहूँच गयी। इसमें दुर्गाबाई किर्लोस्कर, काशीबाई देवधर, वेणूबाई नामजोशी जैसी महिलायें थी।

1892 मे शारदा सदन संस्था का नीजी जगह पर स्थानांतर हो गया। 26 जुलाई 1892 को डॉ. आत्माराम पांडुरंग तर्खडकर की उपस्थिती मे इस भवन का उद्घाटन समारंभ संपन्न हुआ। शारदा सदन को आर्थिक मदद देने का आवाहन आगरकर ने अपने सुधारक 'वृत्तपत्र' से किया। शारदा सदन में स्त्रियों की शिक्षा के साथ खेती, बूनाई, छपाई आदि कलाओं का प्रशिक्षण भी दिया जाता था। रमाबाई असोसिएशन के लिए केवल दस साल तक अमरीका से मदद मिलनेवाली थी। बाद में मदद मिलने की संभावना कम होने के कारण रमाबाई ने पूना से 34 मिल की दूरी पर स्थित केडगाव में 100 एकर जमीन खरीद ली। वहाँ पर खेती करके शारदा सदन के लिए आर्थिक स्त्रोत उपलब्ध कराने का प्रयास इसके पिछे था। इ.स. 1897 में पूना में प्लेग के फैलाव के कारण केडगाव में कूटीया बनाके शारदा सदन का आधा कार्य वहाँ से चलता रहा। इसके साथ ही गुलबर्गा में भी रमाबाई ने एक स्कूल शुरु किया था।

केडगाव में मुक्ती सदन, कृपा सदन और [illegible] की स्थापना :

Savitribai College of Arts ID. No. PU/AN/A/ 58/1999 Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar
PRINCIPAL
Savitribai College of Arts
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

केडगाव यह स्थान पूना और सोलापूर रास्तेपर स्थित है। केडगाव में 2000 लोगों की क्षमता का उपासना मदिर निर्माण किया गया। वहाँ पर एक अस्पताल का भी निर्माण हुआ। कुएँ खोद के पानी की व्यवस्था की गयी। कृपा सदन में पिडीत महिलाओंको आश्रय मिलता था। तो प्रीतिसदन में अशक्त और अपाहिज लोगो को सहारा दिया जाता था। अंधो को भी सदन मे सहारा दिया जाता था। इन सब सदनोकी निर्मिती पंडिता रमाबाई की कल्पना से ही केडगाव में की गयी थी।

पंडिता रमाबाई का इतर क्षेत्रों में कार्य :

1) पंडिता रमाबाई नें हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा बनाने का आग्रह किया। राष्ट्रसभा के अधिवेशन में अंग्रेजी भाषा से व्याख्यान होते थे, इस बात पर उन्होने निराशा जतायी थी।
2) पंडिता रमाबाई ने धूम्रपाननिषेध स्त्री मंडल नामक संस्था का सदस्यत्व लिया और धुम्रपान निषेध के लिए व्याख्यान दिए।
3) इ.स. 1889 की मुंबई कॉंग्रेस अधिवेशन में 1889 महिला सदस्यों में आठ महिला सदस्य आर्य महिला समाज और 'धूम्रपाननिषेध स्त्री मंडल' की ओर से उपस्थित थे। यह दोनो संस्था पंडिता रमाबाई के अंतर्गत कार्य कर रही थी।
4) कॉंग्रेस अधिवेशन के बाद कॉंग्रेस के मंडप में ही सामाजिक परिषद का आयोजन किया जाता था। 29 दिसंबर 1889 की तिसरी सामाजिक परिषद में पंडिता रमाबाईने सक्रिय सहयोग दिया था। विधवाओं के बाल काटने (केशवपन प्रथा) के मुदद् के विरोध मे जो ठराव प्रस्तुत किया गया उसके समर्थन में उन्होने भाषण किया था।
5) 1897 में मध्यप्रदेश के अकालबाधित विभागों में उन्होने दौरा किया था। वहा पर रिलिफ कँप की स्थापना करके ख्रिश्चन धर्म के प्रचार का कार्य उन्होने किया। इस समय 1200 से अधिक लड़कियोंने ख्रिश्चन धर्म का स्विकार किया। इ.स. 1902 में गुजरात में जो अकाल पड़ा वहा पर उनके आठ स्वयंसेवकोंने सहयोग लिया। उस वक्त 1350 स्त्रियां एवं बच्चे केडगाव में लाए गये थे।

इस प्रकार पंडिता रमाबाई का सामाजिक कार्य व्यापक था। स्त्रियों की उन्नति के लिए उन्होने प्रयत्न किया। पंडिता रमाबाई के इस सामाजिक कार्य को ध्यान में रखते हुए ब्रिटिश सरकारने उनको कैसर–इ–हिंद किताब से सन्मानित किया। पंडिता रमाबाई ने समाज के विरोध का सामना करते हुए स्त्रियों के उध्दार हेतू विशेष कार्य किया। बालविवाह प्रथा का विरोध, विवाह की उम्र से संबंधित बील के लिए आंदोलन, विधवा स्त्रियों की शिक्षा, विधवा विवाह का पुरस्कार, किंडर गार्डन शिक्षा प्रणाली, हिंदी राष्ट्रभाषा का स्वीकार, देवनागरी लिपी का पुरस्कार, विधवाओं के लिए आश्रमों की स्थापना, बायबल का मराठी भाषा में अनुवाद, आदि सामाजिक सुधारों में पंडिता रमाबाईने विशेष सहयोग दिया। इसी कारण भारत की समाज सुधार आंदोलन में स्त्री समाजसुधारकों में उनका कार्य विशेष महत्व रखता है।

संदर्भ ग्रंथ

1) गाठाळ एस.एस., भारतीय इतिहासातील स्त्रिया व स्त्री जीवन, कैलाश पब्लिकेशन्स, औरंगाबाद, 2013.
2) ढेरे अरुणा, विस्मृतीचित्रे, श्रीविद्या प्रकाशन, पुणे, 1998.
3) देवधर ज्योत्स्ना, रमाबाई, पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई, 1992.
4) पाटील शोभा, स्त्रियांची आत्मचरित्रे : स्त्रीवादी शोध, मल्हार प्रकाशन, पुणे, 2002.
5) पंडिता रमाबाई, माझी साक्ष, रमाबाई मुक्ती मिशन प्रकाशन, पुणे, 1968.
6) भागवत विदयुत, स्त्री प्रश्नाची वाटचाल : परिवर्तनाच्या दिशेने, विभाग 1, प्रतिमा प्रकाशन, पुणे, 2001.
7) भगवत विद्युत, स्त्रियांचे मराठीतील लेखन, साहित्य अकादमी, 2013.

Savitribai College of Arts ID. No. PU/AN/A/58/1999 Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar
PRINCIPAL
Savitribai College of Arts
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

८) लांजेवार ज्योती, भारतीय समाज व स्त्री, सुगावा प्रकाशन, पुणे, 2005.

९) सिसिलिया कार्तव्हालो, महाराष्ट्राचे शिल्पकार : पंडिता रमाबाई, महाराष्ट्र राज्य साहित्य व संस्कृती मंडळ, मुंबई, 2007.

Savitribai College of Arts ID. No. PU/AN/A/ 58/1999 Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

PRINCIPAL
Savitribai College of Art's
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. A.Nagar